संकलनकर्ता
डॉ. प्रकाशचंद्र गंगराड़े

वेद, उपनिषद्, दर्शन, पुराण, गीता,
रामायण, महाभारत, स्मृतियां तथा
अन्यान्य महाधर्म ग्रंथों से उद्धृत

धार्मिक सूक्तियां

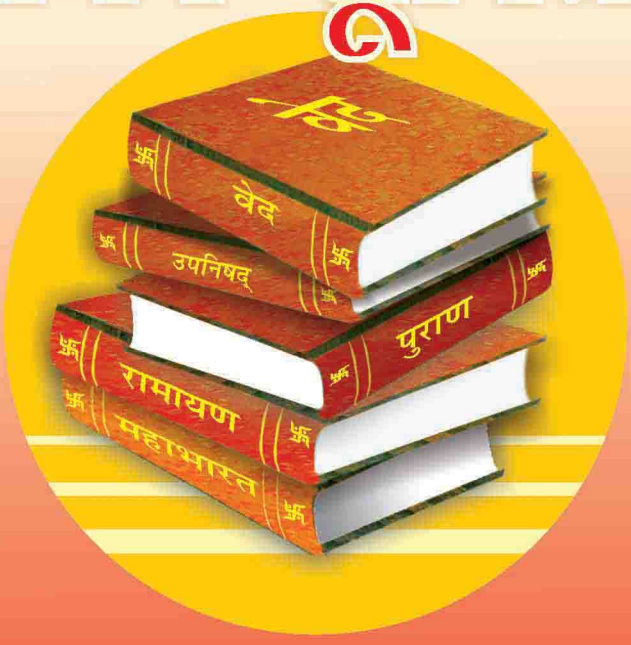

आत्म विकास में सहायक, प्रेरक व मार्गदर्शक
धार्मिक सूक्तियों का अनूठा संकलन

प्रेरक धार्मिक सूक्तियों का एक अनोखा संग्रह, जो जीवन को संबल देने का सामर्थ्य रखती हैं।

आइए ! जानें, इसमें क्या-क्या है–

- ✔ वेदों, उपनिषदों, पुराणों, दर्शनों, स्मृतियों, नीतियों एवं महाभारत व रामायण में उपदिष्ट गूढ़-ज्ञान की सरल प्रस्तुति।
- ✔ सुभाषित वचनों से दैनिक कार्य-कलाप में अनुभवजन्य प्रयोग।
- ✔ महान् ऋषि, मुनि, संतों, महात्माओं व विद्वानों द्वारा कही गई सूक्तियों का दुर्लभ संकलन।
- ✔ प्रवचनों, व्याख्यानों, लेखन कार्यों तथा अनेक बौद्धिक क्रिया-कलापों में प्रयुक्त करने योग्य प्रभावी सूक्तियां।

महान् कथन

❖ पृथ्वी पर अन्न, जल और सूक्तियां ही रत्न हैं।

–चाणक्य

❖ ज्ञानियों के ज्ञान और युगों के अनुभव सूक्तियों द्वारा सुरक्षित रहते हैं।

–डिजरायली

❖ महान् व्यक्तियों की सूक्तियां अपूर्व आनंद को देने वाली, उत्कृष्टतर पद पर पहुंचाने वाली और मोह को पूर्णतया दूर करने वाली होती हैं।

–योगवासिष्ठ

❖ दुराग्रह से ग्रस्त चित्त वालों के लिए सूक्तियां व्यर्थ हो जाती हैं।

–माघ

❖ इस संसार में दो वृक्ष अमृत समान फल देने वाले हैं। पहला सुभाषित का रसास्वादन और दूसरा सज्जनों की सत्संगति।

–चाणक्यनीति 16/18

❖ जीवन भर के कितने अनुभवों का अमृत कुंड सूक्ति के एक बिंदु में रहता है।

–रामकुमार वर्मा

❖ पुष्प जैसे हमारी घ्राण तथा चाक्षुष शक्तियों को आह्लादित करता है, वैसे ही सूक्तियां हमारे मन तथा मस्तिष्क को पुलकायमान करती हैं।

–अनाम/अज्ञात

❖ फसल कटने के बाद खेत में पड़े हुए दानों पर निर्वाह करने वाला जिस प्रकार दानों को चुनकर संग्रह करता है, उसी प्रकार बुद्धिमान व्यक्ति को अच्छे वचनों, सूक्तियों तथा उनसे मिलने वाले उपदेशों को संचित करते रहना चाहिए।

–विदुरनीति

धर्म-ग्रंथों से उद्धृत

धार्मिक सूक्तियां

व्यक्तित्त्व विकास में सहायक, प्रेरक व मार्गदर्शक
धार्मिक सूक्तियों का अनूठा संकलन

संकलनकर्ता
डॉ. प्रकाशचंद्र गंगराड़े

वी एण्ड एस पब्लिशर्स

प्रकाशक

वी एण्ड एस पब्लिशर्स

F-2/16, अंसारी रोड, दरियागंज, नयी दिल्ली-110002
☎ 23240026, 23240027 • *फैक्स:* 011-23240028
E-mail: info@vspublishers.com • *Website:* www.vspublishers.com

शाखा: हैदराबाद
5-1-707/1, ब्रिज भवन (सेन्ट्रल बैंक ऑफ इण्डिया लेन के पास)
बैंक स्ट्रीट, कोटी, हैदराबाद - 500 095
☎ 040-24737290
E-mail: vspublishershyd@gmail.com

शाखा : मुम्बई
जयवंत इंडस्ट्रिअल इस्टेट, 1st फ्लोर-108, तारदेव रोड
अपोजिट सोबो सेन्ट्रल, मुम्बई - 400 034
☎ 022-23510736
E-mail: vspublishersmum@gmail.com

फ़ॉलो करें:

© **कॉपीराइट:** वी एण्ड एस पब्लिशर्स

ISBN 978-93-521506-4-9

DISCLAIMER

इस पुस्तक में सटीक समय पर जानकारी उपलब्ध कराने का हर संभव प्रयास किया गया है। पुस्तक में संभावित त्रुटियों के लिए लेखक और प्रकाशक किसी भी प्रकार से जिम्मेदार नहीं होंगे। पुस्तक में प्रदान की गयी पाठ्य सामग्रियों की व्यापकता या सम्पूर्णता के लिए लेखक या प्रकाशक किसी प्रकार की वारंटी नहीं देते हैं।

पुस्तक में प्रदान की गयी सभी सामग्रियों को व्यावसायिक मार्गदर्शन के तहत सरल बनाया गया है। किसी भी प्रकार के उद्धरण या अतिरिक्त जानकारी के स्रोत के रूप में किसी संगठन या वेबसाइट के उल्लेखों का लेखक या प्रकाशक समर्थन नहीं करता है। यह भी संभव है कि पुस्तक के प्रकाशन के दौरान उद्धृत बेवसाइट हटा दी गयी हो।

इस पुस्तक में उल्लिखित विशेषज्ञ के राय का उपयोग करने का परिणाम लेखक और प्रकाशक के नियंत्रण से हटकर पाठक की परिस्थितियों और कारकों पर पूरी तरह निर्भर करेगा।

पुस्तक में दिये गये विचारों को आजमाने से पूर्व किसी विशेषज्ञ से सलाह लेना आवश्यक है। पाठक पुस्तक को पढ़ने से उत्पन्न कारकों के लिए पाठक स्वयं पूर्ण रूप से जिम्मेदार समझा जायेगा।

उचित मार्गदर्शन के लिए पुस्तक को माता-पिता एवं अभिभावक की निगरानी में पढ़ने की सलाह दी जाती है। इस पुस्तक के खरीददार स्वयं इसमें दिये गये सामग्रियों और जानकारी के उपयोग के लिए सम्पूर्ण जिम्मेदारी स्वीकार करते हैं।

इस पुस्तक की सम्पूर्ण सामग्री का कॉपीराइट लेखक/प्रकाशक के पास रहेगा। कवर डिजाइन, टेक्स्ट या चित्रों का किसी भी प्रकार का उल्लंघन किसी इकाई द्वारा किसी भी रूप में कानूनी कार्रवाई को आमंत्रित करेगा और इसके परिणामों के लिए जिम्मेदार समझा जायेगा।

अपनी बात

श्रेष्ठ संस्कारवान मानव का निर्माण करना भारतीय संस्कृति का मूलभूत उद्देश्य है। हमारे प्राचीन ऋषि-मुनियों, साधु-संतों, महापुरुषों, विचारकों, अवतारों, दार्शनिकों, नीतिज्ञों ने अनेक धार्मिक ग्रंथों; जैसे– रामचरितमानस (रामायण), श्रीमद्भगवद्गीता, श्रीमद्भागवत, महाभारत, विदुरनीति, देवीभागवत, गुरुगीता, मनुस्मृति, चाणक्यनीति, भर्तृहरि नीतिशतक, वेदों, पुराणों, उपनिषदों आदि में मानव जीवन को सुसंस्कृत बनाने के लिए धर्म, नीति की पृष्ठभूमि पर सूक्तियां, सुभाषित व उपदेशों की रचनाएं कीं, ताकि सामान्य लोग भी सुभाषित वाक्यों को अपनाकर आध्यात्मिक जीवन को साकार करने हेतु, धार्मिकता के भावों की भरपूर वृद्धि कर सकें और वे अपना जीवन सफल बना सकें।

इसमें कोई संदेह नहीं कि धार्मिक, नीतिगत सूक्तियां हमारे हृदय को स्पर्श करने में सक्षम होने के कारण जीवन को बदल देने तक की सामर्थ्य रखती हैं। आज के तनावयुक्त, व्यस्त, संघर्षमय व भागमभाग के युग में हर व्यक्ति का जीवन अशांत बन गया है। ऐसे वातावरण में इनके सीमित श्लोकों, चौपाइयों के शब्दों में जादू का सा चमत्कारिक असर होता है, जो सूक्तियों का रूप धारण कर हमें प्रेरित, उत्साहित करके स्फूर्ति प्रदान करती हैं। हमारे सुख-दुख में मार्गदर्शन प्रदान कर जीवन को नया मोड़ देने में कारगर सिद्ध होती हैं। यहां तक कि हमारी कायाकल्प भी कर सकती हैं।

यूं तो हमारे धार्मिक साहित्य में सूक्तियां, सुभाषित यत्र-तत्र बिखरी हुई मिलती हैं, लेकिन जब हमें उनकी जरूरत संदर्भ के रूप में होती है, तब उन्हें ढूंढ़ निकालना आसान काम नहीं होता। इसी कठिनाई को दूर करने के लिए उन सबका संकलन एक ही पुस्तक के रूप में प्रस्तुत करना, इस पुस्तक का मुख्य उद्देश्य है, ताकि इसका उपयोग संदर्भ ग्रंथ की तरह हो सके। इसमें अकारादि क्रम से विषयों का चयन 'सर्वजन हिताय' को ध्यान में रखकर किया गया है, जिससे विषय ढूंढ़ने में कठिनाई न हो। इन्हें श्लोक, चौपाई के साथ संदर्भ व

अर्थ सहित संकलित किया गया है। आशा है, विद्यार्थियों, शिक्षकों, लेखकों, पत्रकारों, संपादकों, वक्ताओं, धर्मोपदेशकों, समाज-सेवियों के लिए तो यह पुस्तक अत्यंत उपयोगी संदर्भ ग्रंथ होगा ही, साथ ही आम पाठक भी अपने दैनिक जीवन में नित्य-प्रतिदिन नई-नई सूक्ति पर चिंतन-मनन कर अपने जीवन को श्रेष्ठ विचारों से उन्नति के मार्ग पर ले जाने में इस ग्रंथ को उपयोगी पाएंगे।

अंत में, इस पुस्तक को लिखने के लिए मैंने जिन अनेक ग्रंथों से सूक्तियां उद्धृत की हैं, उन सभी के रचयिताओं और प्रकाशकों के प्रति मैं अपना आभार प्रकट करता हूं।

–डॉ. प्रकाशचंद्र गंगराड़े
भोपाल (म.प्र.)

अनुक्रम्

अवतार 9
अन्न/आहार 11
अतिथि/मेहमान 14
अग्निहोत्र/हवन कर्म 17
आत्मा 19
आचरण/व्यवहार 21
आलस्य/आलस 24
इंद्रियां 26
ईश्वर/परमात्मा/भगवान 28
उत्साह/साहस/हिम्मत 31
उपासना/प्रार्थना 33
ऊँ/ओ३म् 36
कर्म 39
क्रोध 43
क्षमा 46
ख्याति/प्रसिद्धि/यश 49
गायत्री मंत्र 51
गाय/गौ 54
गंगा 57
गुरु 60
गुण/सद्गुण 63
घमंड/अहंकार 66
जप/स्मरण 68
ज्ञान/ज्ञानी 71
तप/तपस्या 74
तीर्थ/पूज्य स्थल 77
दया/सहानुभूति 80
दान/दक्षिणा 82
दुष्ट/क्रूर/निर्दयी 85
दुःख/कष्ट 88
दोष/अवगुण 91
धर्म 94
धन/दौलत/संपत्ति 98
ध्यान/साधना 101
नरक 103
नारी/स्त्री/औरत 105
निर्धनता/दरिद्रता/गरीबी 108
निंदा/बुराई/आलोचना 110
नीरोग/स्वास्थ्य 112
पति-पत्नी 118
पाप-पुण्य 121
पुत्र 124
पुनर्जन्म 127
ब्रह्मचर्य 130
ब्राह्मण 133
बुद्धि/बुद्धिमान 136

भक्त/भक्ति 139
भजन/कीर्तन.....142
भय/डर.....145
भाग्य 147
मन 149
माता-पिता 152
मृत्यु 155
मानव/मनुष्य.....158
मित्र/मित्रता 161
मूर्ख/मूर्खता 164
मोक्ष/निर्वाण 167
मौन/शांत 170
यज्ञ 172
रामनाम/प्रभुनाम 175
लक्ष्मी.....179
लोभ.....182
वाणी 184
विवाह 187
विद्या 190
विषयपरक/काम-वासना 193
विपत्ति/संकट/आपत्ति 197
वेद.....200
शांति.....203
श्रद्धा/आस्था 205
श्राद्ध.....208
स्नान 211
स्वर्ग 214
सज्जन/सज्जनता 217
सत्य 220
सत्संग.....223
संतोष/सब्र 226
संस्कार 229
साधु/महात्मा 232
स्वाध्याय 235
सूर्य 237
सुख 240

अवतार

✦ धर्मावनायोरुकृतावतारः।
—श्रीमद्भागवत 6/8/19

भगवान धर्म की रक्षा के लिए अवतार लेते रहते हैं।

✦ यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत।
अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम्॥
परित्राणाय साधूनां विनाशाय च दुष्कृताम्।
धर्मसंस्थापनार्थाय संभवामि युगे युगे॥
—श्रीमद्भगवद्गीता 4/7-8

भगवान श्रीकृष्ण कहते हैं—जब-जब धर्म की हानि और अधर्म की वृद्धि होती है, तब-तब ही मैं अपने रूप को प्रकट करता हूं यानी अवतार लेकर आता हूं। सज्जनों की रक्षा, दुष्टों का विनाश और धर्म की अच्छी तरह से पुनः स्थापना—इन तीन कामों के लिए मैं प्रत्येक युग में प्रकट हुआ करता हूं।

✦ हत्वा क्रूरं दुराधर्षं देवर्षीणां भयावहम्।
दशवर्षसहस्राणि दशवर्षशतानि च॥
वत्स्यामि मानुषे लोके पालयन्पृथिवीमिमाम्॥
—वाल्मीकिरामायण/बालकांड 15/29-30

भगवान विष्णु कहते हैं—देवताओं और ऋषियों को भय देने वाले उस क्रूर एवं बलशाली राक्षसराज रावण का नाश करके मैं ग्यारह हजार वर्षों तक पृथ्वी का पालन करता हुआ मनुष्य लोक में निवास करूंगा। इस प्रकार भगवान ने देवताओं की प्रार्थना पर दशरथजी के घर में मनुष्य रूप में अवतार लेना स्वीकार कर लिया।

✦ निज इच्छां प्रभु अवतरइ सुर महि गो द्विज लागि।
—श्रीरामचरितमानस/किष्किंधाकांड 26

देवता, पृथ्वी, गौ और ब्राह्मणों के लिए प्रभु अपनी इच्छा से अवतार लेते हैं।

✦ न तस्य कार्यकारणं न विद्यते।
स्वाभाविकी नबलं क्रिया च ॥
—बृहदारण्यक उपनिषद्

संसार को बनाने में ईश्वर का न कोई कार्य-विशेष है और न ही कोई विशेष-प्रयोजन है किंतु ज्ञान, बल और क्रिया—ये तीन वस्तुएं भगवान के अन्यतम स्वाभाविक गुण हैं। परमात्मा अपने भक्त की अनन्य भक्ति से प्रसन्न होकर उसका उद्धार करने स्वयं ही अवतरित हो जाते हैं।

✦ असुर मारि थापहिं सुरन्ह, राखहिं निज श्रुति सेतु।
जग बिस्तरहिं बिषद जस, राम जन्म करि हेतु ॥
—श्रीरामचरितमानस

अवतारी पुरुष राक्षसों को मारकर देवत्व की स्थापना करते हैं और अपने सनातन पवित्र-यश आचरण का प्रकाश फैलाते हैं। यही भगवान राम के अवतार का उद्देश्य कहा गया है।

✦ मर्त्यावतारस्त्विह मर्त्यशिक्षणं रक्षोवधार्येव न केवलं विभोः।
कुतोन्यथा स्याद्रमतः स्व आत्मनः सीताकृतानि व्यसनानीश्वरस्य ॥
—श्रीमद्भागवत 5/19/5

श्री राम के अवतार प्रसंग में कहा गया है कि प्रभो! आपका मनुष्यावतार केवल राक्षसों के वध के लिए नहीं है, इसका मुख्य उद्देश्य तो मनुष्यों को शिक्षा देना है अन्यथा अपने स्वरूप में ही रमण करने वाले साक्षात जगदात्मा जगदीश्वर को सीताजी के वियोग में इतना दुःख कैसे हो सकता था।

✦ न तस्य रोगो न जरा न मृत्युः प्राप्तस्य योगाग्निमयं शरीरम्।
श्वेताश्वतरोपनिषद् 2/12

अवतारों को दिव्य शरीर प्राप्त होने के कारण योगाग्निमय तेज से आलोकित होता है। इसीलिए वे सदैव आभामंडल से अलौकिक व सदैव युवा अवस्था में तेजोमय होते हैं। उन्हें न रोग सताता है, न वृद्धावस्था आती है और न ही वे मृत्यु को प्राप्त होते हैं।

✦ प्रजापतिश्चरति गर्भेरन्तरजायमानो बहुधाविजायते।
—यजुर्वेद 31/19

प्रजापालक भगवान गर्भ के मध्य में विचरता है, यद्यपि वह अजन्मा है, तथापि अनेक प्रकार से उत्पन्न होता है। ❑❑❑

अन्न/आहार

✦ आहारप्रभवाः प्राणाः।
—महाभारत/वनपर्व 260/25

भोजन से ही प्राणों की रक्षा होती है।

✦ सर्वो वा एष जग्धपाप्मा यस्यान्नमश्नन्ति।
—अथर्ववेद 9/7/8

वह मनुष्य निष्पाप हो जाता है, जिसका अन्न कई प्राणी खाते हैं।

✦ अन्नाद् भवन्ति भूतानि पर्जन्यादन्नसंभवः।
यज्ञाद् भवति पर्जन्यो यज्ञः कर्मसमुद्भवः ॥
—श्रीमद्भगवद्गीता 3/14

संपूर्ण प्राणी अन्न से उत्पन्न होते हैं, अन्न की उत्पत्ति वर्षा से होती है, वर्षा यज्ञ से होती है और यज्ञ सत्कर्मों से उत्पन्न होने वाला है।

✦ भुञ्जानो मनुजव्याघ्र नैव शंकां समाचरेत्।
—महाभारत/अनुशासनपर्व 104/99

हे पुरुष श्रेष्ठ! भोजन करते हुए कभी भी संदेह न करो कि मुझे यह अन्न पचेगा या नहीं।

✦ पूजितं ह्यशनं नित्यं बलमूर्जं च यच्छति।
अपूजितं तु तद्भुक्तमुभयं नाशयेदिदम् ॥
—मनुस्मृति 2/55

नित्य पूजित हुआ अन्न बल और ऊर्जा को प्रदान करता है। जो अन्न पूजित नहीं होता है, उसे खा लिया जाए तो उक्त दोनों का नाश कर देता है।

✦ तेजो बलं च रूपं च सत्वं वीर्य धृतिर्द्युतिः।
ज्ञानमेधा तथाऽयुश्च सर्वमन्ने प्रतिष्ठितम् ॥
—महाभारत

तेज, बल, रूप, वीर्य, बुद्धि, कांति, मेधा तथा आयु ये सब पवित्र अन्न पर निर्भर करते हैं।

✦ अन्नं ब्रह्म यतः प्रोक्तमन्ने प्राणाः प्रतिष्ठिताः।
अन्नाद् भवन्ति भूतानि जगदन्नेन वर्तते ॥
अन्नमेव ततो लक्ष्मीरन्नमेव जनार्दनः ॥
—श्रीमत्स्यपुराण 83/42-43

अन्न ब्रह्म स्वरूप है क्योंकि अन्न में प्राणियों के प्राण प्रतिष्ठित रहते हैं और अन्न से ही प्राणी उत्पन्न होते हैं, अतः अन्न स्वयं भगवान् विष्णु एवं लक्ष्मी का स्वरूप है।

✦ दीपो भक्षयते ध्वान्तं कज्जलं च प्रसूयते।
यदन्न भक्षयेन्नित्यं जायते तादृशी प्रजा ॥
—चाणक्यनीति 8/3

दीपक काले अंधकार को दूर कर देता है और काजल उत्पन्न करता है, इसी प्रकार जो मनुष्य जैसा अन्न खाता है, उसकी वैसी ही संतान उत्पन्न होती है।

✦ स भारः सौम्य भर्तव्यो यो नरं नावसीदयेत्।
तदन्नमपि भोक्तव्यं जीर्यते यदनामयम् ॥
—रामायण

जैसे जिस बोझ को मनुष्य द्वारा उठाने व ढोने से थकान उत्पन्न नहीं होती उसी बोझ को उठाना-ढोना चाहिए, वैसे ही जो अन्न सेवन करने पर विकार उत्पन्न न करके पच जाए वही अन्न सेवन करना चाहिए।

✦ कृते चास्थिगताः प्राणास्त्रेतायां मांससंस्थिताः।
द्वापरे रुधिरं यावत् कलावन्नादिषु स्थिताः ॥
—पाराशरस्मृति 1/30

सत्य युग में प्राण हड्डियों में, त्रेता में मांस में, द्वापर में रुधिर में किंतु कलियुग

में तो प्राण अन्नादि में ही स्थित रहते हैं अर्थात् कलियुग में अन्न न मिलने पर प्राण का नाश हो जाता है।

✦ वारिदस्तृप्ति माप्नोति सुखमक्षयमन्नदः।
—मनुस्मृति/गृहस्थ 229

जल का दान करने वाला पूर्ण संतुष्टि प्राप्त करता है और अन्न का दान करने वाला अक्षय सुख की प्राप्ति करता है।

✦ यद्वा आत्मसम्मितमन्नं तदवति। तन्न हिनस्ति ॥
यद् भूयो हिनस्ति तद्। यत्कनीयो न तदवति ॥
—शतपथ ब्राह्मण

जो अन्न मात्रा में भूख के अनुकूल होता है वह संतोष को बढ़ाता है यानी तृप्तिकारक और शरीर की रक्षा करता है। अर्थात् हानि नहीं करता। अधिक अन्न हानि करता है जबकि मात्रा से कम सेवन करने पर संतोष प्रदान नहीं करता।

✦ शिवौ ते स्तां व्रीहियवावबलासावदोमधौ।
एतौ यक्ष्मं वि बाधेते एतौ मुञ्चतौ अंहसः ॥
—अथर्ववेद 8/2/18

हे मनुष्य! धान्य (चावल) और जौ मेरे लिए लाभकारी, बलकारी, कफदोषों को दूर करने वाले और खाने के लिए मशहूर हैं। ये दोनों यक्ष्मा आदि रोगों को नष्ट कर मन और शरीर की पीड़ा को हटाते हुए दोषों से मुक्त करते हैं।

✦ पूजयेदशनं नित्यमद्याच्चैतदकुत्सयन्।
दृष्ट्वा हृष्येत् प्रसीदेच्च प्रतिनन्देच्च सर्वशः ॥
—मनुस्मृति 2/54

अन्न का सदैव सम्मान करें, निन्दा न करते हुए उसका सेवन करें। उसे देखकर हर्षित हों, प्रसन्न हों तथा सब प्रकार से उसकी प्रशंसा करें।

✦ बिनु अन्न दुखी सब लोग मरै।
—श्रीरामचरितमानस/उत्तरकांड 5

अन्न के बिना सब लोग दुखी होकर मरते हैं।

❑❑❑

अतिथि/मेहमान

✦ अतिथिदेवो भव।
—तैत्तिरीयोपनिषद् 1/11/2

अतिथि देवस्वरूप होता है। उसकी सेवा देव पूजा कहलाती है। इसलिए अतिथि को देवता ही मानो।

✦ अज्ञातगोत्र नामानं अन्यग्रामादुपागतम्।
विपश्चितोऽतिथिप्रहिर्विष्णुवत् तं प्रपूजयेत्॥
—नारदपुराण/पूर्वभाग 27/73

जिसका नाम और गोत्र पहले से ज्ञात न हो और जो दूसरे नगर या गांव से आया हो, ऐसे व्यक्ति को विद्वान पुरुष अतिथि कहते हैं। उसका भगवान विष्णु के समान पूजन करना चाहिए।

✦ अतिथिः पूजितो यस्य गृहस्थस्य तु गच्छति।
नान्यस्तस्मात्परोधर्म इति प्राहुर्मनीषिणः॥
—महाभारत/अनुशासनपर्व 2/70

मनीषी पुरुषों का ऐसा कहना है कि जिस गृहस्थ का अतिथि पूजित होकर जाता है, उसके लिए उससे बड़ा अन्य धर्म नहीं है।

✦ आवत ही हरषे नहीं नयनन नहीं सनेह।
तुलसी तहां न जाइए कंचन बरसे मेह॥
—गोस्वामी तुलसीदास

यदि अतिथि के आते ही आतिथेय प्रसन्न न हो और उसकी आंखों से स्नेह प्रकट न हो, तो तुलसीदासजी कहते हैं कि वहां नहीं जाना चाहिए, चाहे वहां पर सोने की ही वर्षा क्यों न होती हो।

✦ न वै स्वयं तदश्नीयादतिथिं यन्न भोजयेत्।
धन्यं यशस्यमायुष्यं स्वर्ग्यं वा तिथिपूजनम्॥
—मनुस्मृति 3/106

जिस भोज्य पदार्थ को अतिथि को नहीं खिलाया हो, उस भोज्य पदार्थ को स्वयं कभी नहीं खाना चाहिए। मतलब यह कि गृहस्थ स्वयं जैसा भोजन करे वैसा ही अतिथि को भी दे। अतिथि का सत्कार-पूजन; धन्य, सौभाग्य, यश, आयु और सुख को निरंतर बढ़ाने वाला है।

✦ पीठं दत्त्वा साधवेऽभ्यागताय आनीयापः परिनिर्णिज्य पादौ।
सुखं पृष्ट्वा प्रतिवेद्यात्मसंस्थां ततो दद्यादन्नमवेक्ष्य धीरः॥
—महाभारत/उद्योगपर्व 38/2

महात्मा विदुर धृतराष्ट्र से कहते हैं कि राजन! धीर पुरुष को चाहिए कि जब कोई सज्जन अतिथि के रूप में घर आए, तो पहले आसन देकर एवं जल लाकर उसके चरण धोने चाहिए, फिर उसकी कुशल क्षेम पूछकर अपनी स्थिति बतानी चाहिए, तदुपरांत आवश्यकता समझकर उसे भोजन कराना चाहिए।

✦ पादोदकं पादघृतं दीपमन्नं प्रतिश्रयम्।
प्रयच्छन्ति तु ये राजन् नोपसर्पन्ति ते यमम्॥
—महाभारत/वनपर्व 200/23-24

जो लोग अतिथि को चरण धोने के लिए जल, पैर की मालिश के लिए तेल, प्रकाश हेतु दीपक, भोजन के लिए अन्न और रहने के लिए स्थान देते हैं, वे कभी यमद्वार नहीं देखते यानी यमराज के यहां नहीं जाते।

✦ स्वागतेनाग्नयस्तुष्टा भवन्ति गृहमेधिनः।
आसनेन तु दत्तेन प्रीतो भवति देवराट्॥
पादशौचेन पितरः प्रीतिमायन्ति दुर्भमाम्।
अन्नदानेन युक्तेन तृप्यते हि प्रजापतिः॥
—हारीतस्मृति 57-58

गृहस्थ लोगों द्वारा अतिथि के स्वागत तथा आतिथ्य करने से अग्निदेव संतुष्ट होते हैं। अतिथि को बैठाने के लिए आसन देने पर देवराज इंद्र प्रसन्न होते हैं। जब गृहस्थ अतिथि के चरण धोता है तो पितर अत्यंत ही प्रीति प्राप्त करते हैं। मिले हुए अन्न दान से प्रजापति तृप्त होते हैं।